" अर्थव्यवस्था को और अधिक मजबूत एवं उदार बनाने में हमें सहयोग दें"
- भारतीय अमरीकी सी ई ओ की बैठक में दिया गया प्रधानमंत्री का भाषण

23 सितम्बर, 2004

न्यूयार्क

" प्रधानमंत्री के रूप में अमरीका की अपनी पहली यात्रा के अवसर पर भारतीयों एवं भारतीय अमरीकी समुदाय की सभा को संबोधित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है ।

मैं बहुत पहले से ही मानता था कि अमरीका में रहने वाला भारतीय समुदाय दो देशों के बीच में बेजोड़ सेतु का कार्य कर रहा है । मुझे इस बात की खुशी है कि राष्ट्रपति बुश ने कुछ दिन पहले हुई मुलाकात में इस बात का खुलासा किया था । अमरीकी इतिहास में किसी भी प्रवासी समूह को एक पीढ़ी (जनरेशन) की अवधि में और वह भी प्रारंभिक चरण में, इतनी अधिक सफलता एवं सम्मान, नहीं किया था जितना कि भारतीय अमरीकियों को मिला है । अमरीकी समाज एवं अर्थव्यवस्था में आपने प्रवासी समुदाय तथा हाल ही में आए प्रवासियों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । आपके कौशल ने अमरीका को प्रतिस्पर्धात्मक बनाया है, आप अनुसंधान के अत्याधुनिक क्षेत्र में नित नए महत्वपूर्ण अनुसंधान कर रहे हैं । विभिन्न व्यवसायों में आपकी सेवाओं ने इस देश की जीवन-शैली की गुणात्मकता को बढ़ाया है। आपकी इस उद्यमशीलता ने अमरीकी व्यवसाय जगत में विशेष छवि बनाई है ।

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि भारतीय अमरीकी अब मीडिया से लेकर सिनेमा तक के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं । आप सभी ने अपने परिश्रम रचनाशीलता, उद्यमशीलता, राष्ट्रों को एक सूत्र में जोड़ने वाले लोकतांत्रिक एवं बहुलवाद के मूल आदर्शो के कारण अद्वितीय प्रतिष्ठा अर्जित की है । इससे आपके सहयोगियों, आपके समुदायों में आपके पड़ोसियों एवं आपके चुने हुए प्रतिनिधियों के बीच भारत प्रति अमरीकी अवधारणा को अनुकूल बनाने में सहायता मिली है ।

लगभग 500 वर्षों से से प्रवासी अमरीका में आए । इनमें कुछ साहसिक कार्यों की खोज में, कुछेक खजाने की तलाश में, कुछ उत्पीड़न से बचने के लिए तथा कुछ प्रवासी तंगी एवं बदहाली से बचने के लिए आए थे । इस संदर्भ में भारतीय अमरीकी समुदाय अपने आप में अनोखा है क्योंकि आप में से अधिकांश यहां ज्ञान, कौशल, प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक अवसरों की तलाश में आए हैं, आप यहां न केवल किसी आशा से बल्कि किसी प्रयोजन के लिए आए हैं । इससे उद्यम एवं अवसर प्रदान करने वाले इस महान राष्ट्र को आपके योगदान से एक निश्चित स्वरूप मिला है ।

प्रवासियों के मन में कई उलझनें होती हैं । मैं इसे भलीभांति समझ सकता हूं क्योंकि मैंने भी कठिन परिस्थितियों एवं संघर्ष के दिनों में अपने जन्म-स्थान से प्रव्रजन किया था । प्रवासी के रूप में घर एवं आजीविका की तलाश में मेरा परिवार तथा मेरे परिवार जैसे अनेक परिवारों को बहुत अधिक कठोर परिश्रम करना पड़ा था । भले ही हमारा अतीत निराशाजनक था तथा वर्तमान संघर्षपूर्ण रहा फिर भी हम भविष्य के प्रति आशान्वित बने रहे । अमरीका में बसे अनेक समुदायों के बारे में भी यही बात सही है । देवियो एवं सज्जनो आप लोगों ने यहां जो सफलता प्राप्त की है, उसका श्रेय आपके

अपने देश द्वारा दी जाने वाली शिक्षा एवं कौशल, तथा आपके मेज़बान देश द्वारा भावी विकास के लिए उपलब्ध कराए गए अवसरों को जाता है । मैं भारतीय अमरीकी समुदाय की इस आशावादिता की विशेषता से प्रभावित रहा हूँ आपने अमरीकी जनता की "हम कर सकते हैं" की भावना को साकार किया है । यही कारण है कि आप अधीर होते हुए भी जो कि स्वाभाविक भी है अपने देश, भारत की ओर प्यार, स्नेह और लालसा भरी नजर से देखते आए हैं ।

मुझे विशेष रूप से इस बात की खुशी है कि पिछले दशक के दौरान देश में प्रारंभ की गई आर्थिक नीतियों ने हमें आपसे पुनः अधिक सकारात्मक रूप से जुड़ने तथा अपनी मातृभूमि के पुनर्निर्माण के सार्थक तरीके अपनाने में सहायता प्रदान की है । इन नई आर्थिक नीतियों का लाभकारी प्रभाव यह हुआ है कि इससे नई प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा मिला है जिससे अंतर महाद्वीपीय संबंधों में घनिष्ठता एवं तात्कालिकता आई है ।

जो प्रवासी पहली बार अमरीकी तटों पर बसे थे वे शायद ही कभी वापस अपने देश गए हों । भारतीयों की पहली पीढ़ी जब अमरीका आई थी तब अधिकांश यात्रा समुद्र से की जाती थी तथा घर के सगे-संबंधियों एवं मित्रों से संपर्क करना बहुत सीमित एवं मुश्किल था । एक अध्ययन के अनुसार 1970 और यहां तक कि 1980 के दशक में भी अमरीका में रहने के लिए आए भारतीयों के मासिक खर्च की सबसे बड़ी राशि घर में की गई कॉल के फोन बिल पर खर्च की जाती थी । अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हॉटमेल, मुफ्त ई-मेल सुविधा जैसी अभिनव पहल के बारे में सबसे पहले भारतीय अमरीकी सबीर भाटिया ने सोचा । वैश्विक साइबर-समुदाय के निर्माण,

भारतीय मूल के लोगों को भारत के निकट लाने में उनके योगदान के प्रति भारत एवं विश्व-भर के लाखों परिवारों को इनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए ।

उद्यम एवं साहसिक कार्य की इसी भावना को मैं भारत में फिर जगाना चाहता हूं और मैं आपको इस बारे में आश्वस्त करने आया हूं कि हमारी सरकार ऐसी नीतियों का पालन करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है जो विचारों एवं अवसरों के द्विपक्षीय प्रवाह को बनाए रखने में सहायक हैं । मैं सदैव कोलम्बिया विश्वविद्यालय, अपने मित्र जगदीश भगवती के बहुत समय पहले अभिव्यक्त इन विचारों से सहमत हूं कि आप जैसी प्रतिभाओं का देशांतर आवश्यक रूप से " प्रतिभा पलायन" में शामिल नहीं होता, बल्कि वास्तविकता यह है कि इससे "प्रतिभा-समूह (ब्रेन बैंक) " बनाने में सहायता मिलती है जिससे हम प्रतिभाएं ले सकते हैं बशर्ते हम अपने देश में अपेक्षित नीतियां एवं बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करा सकें । अपने देश में ऐसी नीतियों एवं कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए यह हमारा सच्चा प्रयास होगा जिससे वास्तव में, आपके और हमारे, अमरीका और भारत के बीच अधिक सार्थक एवं रचनात्मक प्रतिबद्धता पैदा करने में सहायता मिलेगी ।

मुझे यह जानकारी है कि इतनी दूर रहते हुए भी आप हमारे लोगों के कल्याण एवं खुशहाली के लिए सोचते हैं । मैं आपको यह आश्वासन दिलाना चाहता हूं कि हमारी सरकार एक दशक पहले आरंभ किए गए सुधार एवं उदारीकरण के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए वचनबद्ध है । परन्तु जिन सुधारों के महत्व पर हमें ध्यान देना चाहिए वे अर्थ व्यवस्था को मजबूत करने, हमारे उद्यमियों की " कुछ कर गुजरने की भावना " तथा व्यावसायिकों की रचनात्मक क्षमता को बढ़ाने के लिए अपेक्षित हैं, इसमें

हमारे समाज का परिवर्तन एवं मनोदशा का बदलाव भी शामिल है । यद्यपि हमारी उपलब्धियां अपर्याप्त नहीं हैं फिर भी अपेक्षाकृत बहुत कम है । भारत के लिए अपने युवाओं को प्रशिक्षित करने, उनके स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने तथा प्रत्येक रोजगार ढूंढने वाले को आशान्वित करने और अपने लोगों के जीवन-स्तर को सुधारने की आवश्यकता है । हमें प्रतिस्पर्धात्मक विनिर्माण शक्ति के साथ-साथ ज्ञान-आधारित अर्थ-व्यवस्था के विनिर्माता के रूप में उभरना है । ये महत्वाकाक्षाएं अब धीरे-धीरे आम व्यक्ति की भी हैं । हमारा विश्वास है कि हाल ही में संपन्न हुए आम चुनाव से मिला संदेश उन नीतियों में व्यक्त विश्वास की पुष्टि करता है जिन्हें हमने एक दशक पहले प्रारंभ किया था परन्तु अब इसी के साथ हमें एक ऐसी विकासात्मक प्रक्रिया की आवश्यकता है जो साम्यतावादी और सामाजिक दृष्टि से न्यायसंगत हो । मैं उस प्रक्रिया के प्रति वचनबद्ध हूँ तथा हमारी सरकार उन नीतियों का अनुसरण करेगी जो भारत को राष्ट्रों के समूह में उसे यथोचित स्थान दिला सके । भारत से बाहर बसे भारतीयों की उपलब्धियां मेरी इस शंका को दूर करती हैं कि दोष हमारी वैयक्तिक क्षमताओं में न होकर हमारे सामूहिक प्रयास तथा हमारी संस्थागत ढांचों में है । मैं शासन में सुधार और बुनियादी सुविधाओं, विशेषकर बिजली, संचार, हवाई अड्डों एवं शहरी सुविधाओं में घरेलू एवं विदेशी, निजी एवं सार्वजनिक निवेश बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हूं ।

हैदराबाद जैसे शहर तथा इनफोसिस जैसे संगठन पहले से ही शेष भारत के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं तथा परिवर्तन की गति एवं दिशा को सुनिश्चित कर रहे हैं। तेज रफ्तार से दौड़ने के लिए हमें सामाजिक एवं आर्थिक स्थिरता, सांप्रदायिक सौहार्द को सुनिश्चित करना होगा तथा अधिक व्यापक अर्थव्यवस्था एवं समाज को बढ़ावा देना

होगा । उदार समाज एवं मुक्त बाजार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । इन्हें सामाजिक एवं आर्थिक रूप से समन्वित करके संतुलन रखना होता है ।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं हाल ही के वित्तीय क्षेत्र (सेक्टर) एवं प्रबंध अध्ययन को छोड़कर भारत एवं अमरीका के बीच का द्विपक्षीय संवाद सीमित रहा और आशा से काफी कम रहा । इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी कुछ नीतियां एवं अभिवृतियां आंशिक रूप से दोषपूर्ण हैं । इसके अतिरिक्त अमरीका में की गई पहल भी अपर्याप्त है। मुझे विश्वास है कि आप व्यापक कार्यक्षेत्र वाली ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करके दोनों देशों को निकट लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । महत्वपूर्ण साझेदारी में भावी उपायों के प्रथम चरण के संबध में दोनों देशों के बीच में हाल में हुआ समझौता इस अंतराल को आंशिक रूप से पाटने में सहायक होगा । हम अनुसंधान, उच्च शिक्षा एवं अपनी बुनियादी सुविधाओं तथा वित्तीय क्षेत्र में परस्पर घनिष्ठता बढ़ाना चाहते हैं । व्यक्ति से व्यक्ति का संपर्क हमारे राष्ट्रों को एक दूसरे के करीब लाने का कारगर तरीका है ।

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप लोकतंत्र एवं बहुलवाद के सिद्धान्तों के लिए प्रतिबद्ध मजबूत एवं अधिक उदारवादी अर्थव्यवस्था के निर्माण के हमारे प्रयासों में हमारा सहयोग करें और हमारे हाथ मजबूत करें । इस दृष्टि से भारत एवं अमरीका का इतिहास एक जैसा रहा है । हम दोनों विश्व को आतंकवाद के खतरे से निज़ात दिलाने के लिए समान रूप से प्रतिबद्ध हैं । यह आतंकवाद शांति एवं सुरक्षा दोनों के लिए खतरा है तथा यह हम दोनों देशों द्वारा सोचे गए विश्व की अर्थात् स्वतंत्रता एवं बहुलवाद, भागीदारी एवं समानता के विश्व की भावी तस्वीर के मार्ग की चुनौती भी है ।

आप हमारे दो महान लोकतंत्रों के बीच विकासात्मक एवं बौद्धिक सेतु बनकर विलक्षण एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । मैं आपको इस रचनात्मक साहसिक कार्य के लिए आमंत्रित करता हूं । मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम उन आवश्यक नीतियों से संबंधित कदम उठाने के प्रति वचनबद्ध हैं जो आपको इस प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से शामिल होने में सहायक होंगे ।"

,,